जन वाचन आंदोलन

बाल पुस्तकमाला

" किताबों में चिड़ियाँ चहचहाती हैं
किताबों में खेतियाँ लहलहाती हैं
किताबों में झरने गुनगुनाते हैं
परियों के किस्से सुनाते हैं
किताबों में रॉकेट का राज है
किताबों में साइंस की आवाज है
किताबों का कितना बड़ा संसार है
किताबों में ज्ञान की भरमार है
क्या तुम इस संसार में नहीं जाना चाहोगे?
किताबें कुछ कहना चाहती हैं
तुम्हारे पास रहना चाहती हैं "

-सफ़दर हाश्मी

'हाऊ चिल्ड्रेन फेल' के लेखक, विश्व-प्रसिद्ध शिक्षाविद जॉन होल्ट ने दुनिया के तमाम मंहगे और नामी गिरामी स्कूलों को देखा पर वे उनके गले नहीं उतरे। पर डेनमार्क के एक छोटे से गरीब स्कूल ने उनका दिल जीत लिया। यह दुनिया के एक बेहतरीन स्कूल की कहानी है। शिक्षा के लिए पैसों की नहीं, दर्शन और दृष्टि की आवश्यकता होती है। हरेक जिंदादिल शिक्षक और माता-पिता के लिए एक अनिवार्य पुस्तक।

भारत ज्ञान विज्ञान समिति

मूल्य: 12 रुपए B-5 Price: 12 Rupees

अच्छा स्कूल

जॉन होल्ट

इस किताब का प्रकाशन भारत ज्ञान विज्ञान समिति ने देश भर में चल रहे साक्षरता अभियानों में उपयोग के लिए किया गया है। जनवाचन आंदोलन के तहत प्रकाशित इन किताबों का उद्देश्य गाँव के लोगों और बच्चों में पढ़ने–लिखने की रुचि पैदा करना है।

अच्छा स्कूलः जॉन होल्ट
We have to call it school : John Holt
प्रस्तुतिः पुष्पा अग्रवाल

जनवाचन बाल पुस्तकमाला के तहत
भारत ज्ञान विज्ञान समिति द्वारा प्रकाशित

© सर्वाधिकार सुरक्षित,
भारत ज्ञान विज्ञान समिति

रेखांकन : पंकज झा
लेजर ग्राफिक्सः अभय कुमार झा

प्रकाशन वर्षः 1997, 1999, 2000, 2002, 2003, 2004, 2005, 2006

मूल्यः 12 रुपए
Price : 12 Rupees

Bharat Gyan Vigyan Samithi
Basement of Y.W.A. Hostel No. II, G-Block
Saket , New Delhi - 110017
Phone : 011 - 26569943
Fax : 91 - 011 - 26569773
email: bgvs@vsnl.net

अच्छा स्कूल

लेखकः जॉन होल्ट

प्रस्तुति : पुष्पा अग्रवाल

अच्छा स्कूल

डेनमार्क का न्यू लिटिल स्कूल एक ऐसा स्कूल है जहां बच्चों और बड़ों के बीच खुला रिश्ता है। यहां बच्चे बड़ों के साथ निडरता और ईमानदारी से पेश आते हैं। इसीलिए यहां वास्तविक पढ़ाई हो सकती है।

पेगी ह्यूस ने इस स्कूल के साथ दो वर्ष तक काम किया था। उन्होंने इसके बारे में एक फिल्म —'वी हैव टु कॉल इट स्कूल' बनाई। फिल्म के शुरू में एक शिक्षक कहता है, ''हमें इसे स्कूल कहना पड़ता है। बच्चों को स्कूल जाना होता है और अगर हम इसे स्कूल नहीं कहेंगे तो वे यहां नहीं आ सकेंगे।'' लेकिन, इसके अतिरिक्त कि यहां स्कूल के समय आना होता है, और कुछ भी यहां एक स्कूल जैसा नहीं है। यहां कोई 'शिक्षा' नहीं होती। वास्तव में यह 'करने' की जगह है। यहां 6 से 14 वर्ष की उम्र के लगभग 85 बच्चों और 6 वयस्कों का एक जीवंत, रुचिकर, खुशनुमा, सुरक्षित, विश्वासपूर्ण और सहयोगपूर्ण समुदाय है।

इस समुदाय में बच्चे अपनी ज़िंदगी उस तरह जीते हैं जिस तरह वे ठीक समझते हैं। सिवाय उन सीमाओं के, जो हम सब की होती हैं। जैसे — एक दूसरे को मारना नहीं है, दूसरों की या सामूहिक संपत्ति को नुकसान नहीं पहुंचाना है। इस स्कूल में बच्चे अपने पूरे समय का उपयोग जैसा चाहे, जिसके साथ चाहें, जब तक चाहें, कर सकते हैं। शिक्षक बच्चों के यह सब करने की जगह का इंतज़ाम करते हैं और उनका ध्यान रखते हैं। साथ ही वे बच्चों के लिये कम-से-कम कुछ रुचिपूर्ण काम और गतिविधियां सोचते हैं और उन्हें इनको करने के लिए सामग्री,

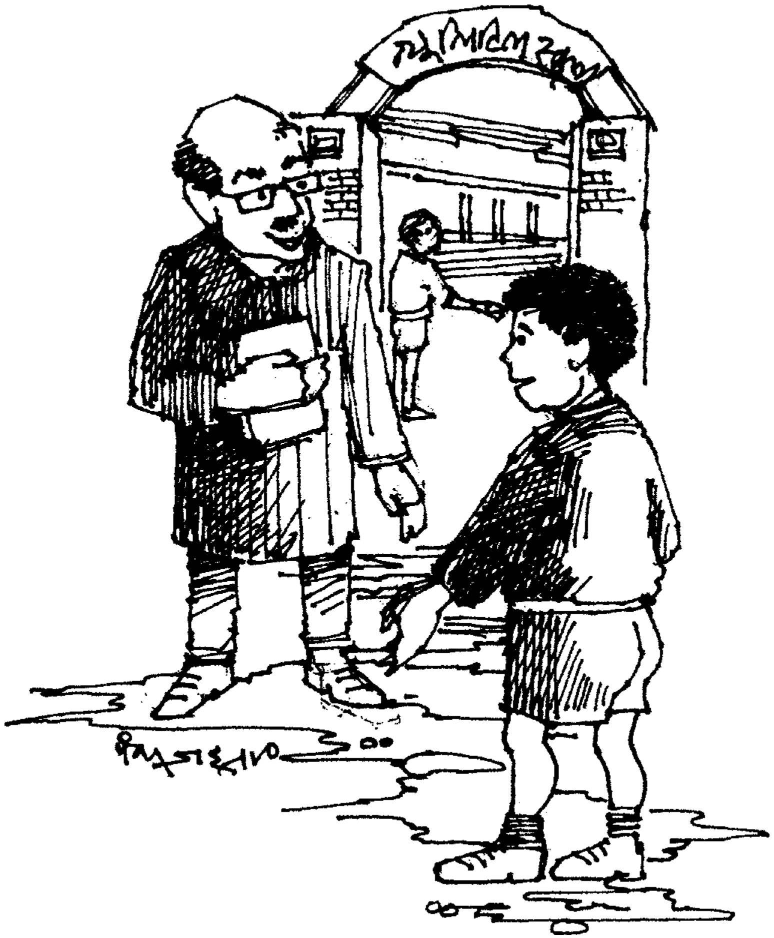

औज़ार आदि उपलब्ध कराते हैं। वे बच्चों के साथ अपनी सामर्थ्य और कौशलों का उपयोग करते हैं। बच्चे अगर मदद चाहते हैं, तो वे उनकी मदद करते हैं। कुल मिलाकर, शिक्षक हर तरह से बच्चों के लिए उपलब्ध रहते हैं—चाहें बच्चे उन्हें अपनी बनाई चीज़ें दिखाना चाहें, प्रश्न पूछना चाहें या सिर्फ उनसे बातें करना, उनके साथ रहना। शिक्षक वहां अपनी बड़ों वाली ज़िम्मेदारी निभाने के लिए नहीं होते—जैसे, बच्चों को हिंट (संकेत) देना,

डराना, हांकना या लालच देना, उन कामों को करवाने के लिये जिन्हें उन्होंने स्वयं या किन्हीं और ने तय किया है बच्चों के हित के लिये।

इस स्कूल में ऐसा कुछ भी नहीं है जिसे लोग शैक्षिक कार्यक्रम कहते हैं। यहां कोई कक्षा नहीं है कोई विषय नहीं है, कोई पाठ्यक्रम है, कोई पूर्व निर्धारित मार्ग नहीं है। यहां न परीक्षा नहीं होती है न ही नंबर या ग्रेड मिलते हैं। बच्चों के बारे में किसी तरह की रिपोर्ट भी यहां नहीं की जाती। अभिभावकों के साथ यहां कोई मीटिंग भी नहीं होती। अगर कभी कोई अभिभावक चिंतित हो या वैसे ही मिलना चाहे तो वह आकर बात कर सकता है।

बच्चों पर पढ़ने के लिये किसी भी तरह का दबाव नहीं डाला जाता। क्या–हम–इसे–यों–करें या क्या–तुम–नहीं–सोचते–कि–ऐसा–करना–चाहिए जैसा कतई कुछ नहीं है—जैसा कि अन्य नई लीक के स्कूलों में बहुत होता है। यहां शिक्षक बच्चों द्वारा किए गए काम को अभिभावकों तथा अन्य लोगों को प्रभावित करने के लिये प्रदर्शित भी नहीं करते। स्कूल में आने वालों को कभी बच्चों की बनाई हुई तस्वीरें, विज्ञान के मॉडल, कलात्मक वस्तुएं आदि नहीं दिखाई जातीं और न ही कभी दुनिया को दिखाने के लिए—कि बच्चे कितने रचनात्मक हैं—नृत्य, नाटक आदि के प्रोग्राम होते हैं।

इसके विपरीत अमेरिका में चोटी के 1% या 2% में गिना जाने वाला एक स्कूल अपनी बुलेटिन में यात्राओं के विवरण में उन क्रियाओं को भी प्रस्तुत करता है जो बच्चों ने की थीं — जैसे, एक जहाज़ पर से सामान उतारा जाता देखना, वाटर वर्क्स

देखना, रेलवे स्टेशन पर किसी व्यक्ति का इंटरव्यू लेना, आदि। उसमें यह भी बताया गया है कि ऐसी यात्राओं में बच्चों की एक योजना होती है, बच्चे लोगों से साक्षात्कार करने के लिये प्रश्नों की सूची बनाते हैं। यहां तक वर्णन है कि एक यात्रा का परिणाम था बच्चों द्वारा बनाया गया एक छः फुट का नक्शा, जिसे टांगने के लिये उसे छत से घिरनियों से खींचा गया!

लेकिन ये नक्शे, ये साक्षात्कार, ये सारे प्रोजेक्ट असल में किनके द्वारा तय किये जाते हैं?

इस तरह के भ्रमणों के ज़्यादातर परिणाम बच्चों के द्वारा तैयार की गई रिपोर्टों, नक्शों, तस्वीरों, कहानियों आदि के रूप में आते हैं। लेकिन क्या हमेशा ही कोई परिणाम होना ज़रूरी है? अगर मैं अपनी रुचि का कुछ देखने जाता हूं तो मुझे बाद में कोई छः फुट का नक्शा तो नहीं बनाना पड़ता या गीत तो नहीं रचना पड़ता या रिपोर्ट तो नहीं लिखनी पड़ती। मैं स्वयं ही तय कर सकता हूं कि अपने अनुभव से मुझे किस तरह का परिणाम चाहिए, अगर चाहिए तो! ज़्यादा आवश्यक तो यह है कि मैं प्रतीक्षा करूं और परिणाम को अपने आप ज़ाहिर होने दूं। इसमें समय लग सकता है, कभी-कभी कुछ वर्ष भी। लेकिन अगर ''रचनात्मक शिक्षक'' इसके लिए ज़ोर लगा रहे हों, प्रेरित कर रहे हों, लगभग धक्का ही दे रहे हों तो ऐसा कभी नहीं होता।

मैनें इस तरह के स्कूल में पढ़ाया है, मैं जानता हूं कि वहां परिणाम कैसे आते हैं। एक स्कूल के प्रमुख गर्व से कहते हैं कि उन्हें बच्चों की किसी चीज़ को गीत में या नृत्य में व्यक्त कर देने की काबिलियत पर हमेशा आश्चर्य होता है। शिक्षकों की ऐसी सभी प्रतिक्रियाएं बच्चों के दिलो-दिमाग में उतरती जाती हैं।

बच्चे शीघ्र ही समझ लेते हैं कि शिक्षक को क्या पसंद है और उन्हें बच्चों का क्या करना अच्छा लगता है। यानि क्या करने से तारीफ, इनाम और अच्छी रिपोर्ट मिलेगी और क्या नहीं करने से—या यह भी दिखा देने से कि उन्हें यह करना अच्छा नहीं लगता—उन्हें उन 'खास व प्रिय शिष्यों के घेरे' से बाहर कर पीछे के अंधेरे में धकेल दिया जाएगा ।

न्यू लिटिल स्कूल में ऐसा कुछ भी नहीं है।

ज़रा भी अंदाज़ा लगाने के लिये कि यह जगह कैसी है, इसे देखना ज़रूरी है। बच्चों और बड़ों के बीच खेले जाने वाले उस

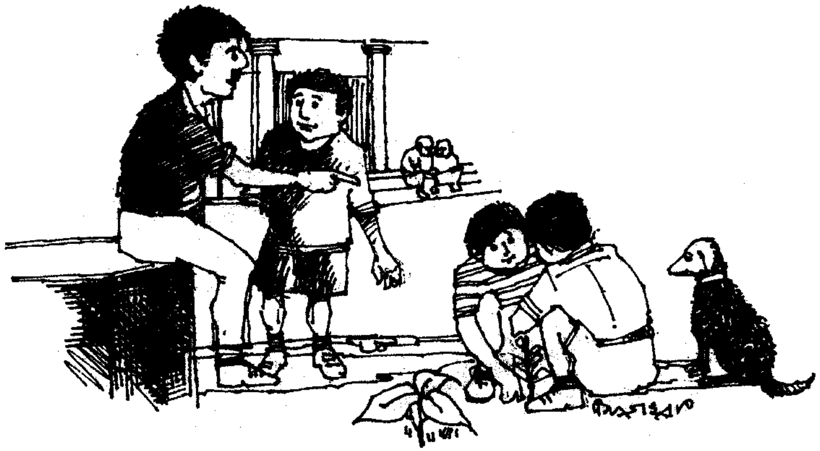

खेल के हम इतने आदि हो चुके हैं—नवाचार मुक्त (ओपन) स्कूलों में भी—जिसमें बड़े हरदम इस चिंता में रहते हैं कि बच्चों से वे काम कैसे करवायें, जो स्कूल उनके लिये तय करता है। और बच्चे इस चिंता में रहते हैं कि कैसे उन कामों से पीछा छुड़ाएं। हम सोच भी नहीं सकते कि ऐसी भी कोई जगह होगी जहां यह खेल नहीं खेला जाता। न्यू लिटिल स्कूल देखने के बाद मेरा और स्कूलों से मन हट चुका है—उनसे भी, जिन्हें अब तक मैं अच्छा समझता था। इन स्कूलों के दिखावटी, सतर्क, सहमें, सिमटे, डरपोक, इतराते हुए बच्चों और न्यू लिटिल स्कूल के स्वाभाविक, निर्भर, खुले और ईमानदार बच्चों में फर्क बहुत ही ज़्यादा है। ज़्यादातर बच्चों का साथ मुझे अच्छा लगता है, लेकिन उन्हें स्कूल में देखने से तो बेहतर है कि मैं उन्हें न ही देखूं।

एक पूरी किताब में भी इसका बयान नहीं किया जा सकता कि न्यू लिटिल स्कूल में क्या-क्या होता है और किस तरह वहां

के बच्चों की ज़िंदगी उनको बदलती है, उनको मज़बूत बनाती है। कोई दो बच्चे एक सा काम नहीं करते, कोई दो दिन एक जैसे नहीं होते। काश, कभी इस स्कूल पर कोई एक किताब लिखता।

लेकिन जो बात मैं स्थापित करना चाह रहा हूं वह यह है कि, यह एक सफल स्कूल है—संकीर्ण शैक्षिक मापदंडों के मुताबिक भी, जिनकी ज़्यादातर मां-बाप और शिक्षकों को फिक्र रहती है। यह एक बहुत सफल स्कूल है। यहां बच्चों को आई.क्यू. या शैक्षिक कौशल के आधार पर भर्ती नहीं किया जाता। कई ऐसे बच्चे भी यहां आते हैं जो अपने पहले स्कूल में बहुत ही खराब कर रहे थे।

लेकिन यहां से निकलने वाले करीब-करीब सभी बच्चे एक ऐसे पारंपरिक हाई स्कूल में गए हैं जो अत्यंत कठिन है। और वहां उन्होंने बहुत अच्छा किया है। जो और ज़्यादा उम्र के हो चुके हैं, उनमें से करीब सभी ने प्राफेशनल ट्रेनिंग ली है—एक ऐसे देश में जहां मात्र पांच प्रतिशत लोग ही ऐसा करते हैं। मैं किसी भी ऐसे स्कूल के बारे में नहीं जानता जिसके इतने अच्छे परिणाम हों।

यह दावा तो नहीं किया जा सकता कि ये बच्चे डेनमार्क के हर वर्ग व हर किस्म के परिवारों का प्रतिनिधित्व करते हैं। डेनमार्क में भी, हमारे देश की तरह, ज़्यादातर लोग अपने बच्चों को ऐसे स्कूल में भेजने की नहीं सोचेंगे। लेकिन न्यू लिटिल के अभिभावकों में आपस में चाहे जो भी भिन्नताएं हों, एक समानता ज़रूर है—वे अपने बच्चों पर विश्वास करते हैं। अगर ऐसा न होता तो वे अपने बच्चों को ऐसे स्कूल में नहीं भेजते।

इस नज़रिए से मां–बाप, और फलस्वरूप उनके बच्चे भी, अद्‌भुत हैं। और यही मेरा कहना है—हम बच्चों पर विश्वास कर सकते हैं कि वे इस दुनिया को जानें—और इस विश्वास के रहते वे ऐसा कर भी पाते हैं।

एक वर्णन :

बैग्सवार्ड - कोपनहेगन का एक छोटा सा मध्यम आय–वर्ग का नगर है। यह स्कूल एक छोटे औद्योगिक क्षेत्र में एक सड़क के किनारे स्थित है। स्कूल और पीछे की तरफ के रिहायशी मकानों के बीच छोटा सा जंगल है जहां बच्चे खेलना पसंद करते हैं। स्कूल एक चार मंज़िला इमारत के प्रथम तल पर है। लेकिन शायद अब इस स्कूल को कोई दूसरी जगह तलाश करनी होगी, क्योंकि इस इमारत की अब किसी और उपयोग के लिए ज़रूरत है। स्कूल का मुख्य कमरा—जो कुल जगह का दो तिहाई है—लंबा और संकरा है। इसमें दोनों दीवारों में खिड़कियां हैं। यह कमरा औद्योगिक उपयोग के लिये बनाया गया था, इसलिये इसमें खिड़कियां फर्श से 4–5 फीट की ऊंचाई पर हैं और बच्चों को बाहर देखने के लिए ऊपर चढ़ना पड़ता है। इससे कुछ खास हानि भी नहीं है, क्योंकि वहां बाहर देखने के लिये कुछ खास है ही नहीं, सिवाय उस जैसी दूसरी इमारतों के।

मुख्य हॉल के पास एक छोटी सी व्यायाम शाला है। यहां स्कूल की सब मीटिंग होती हैं। हॉल के दूसरी ओर शौचालय के पास दो छोटे कमरे हैं। इनमें से एक मुख्यतः संगीत के लिये

उपयोग में लाया जाता है। मुख्य हॉल में एक तरफ वर्कशॉप है। बाकी जगह को 2000 बीयर की लकड़ी की पेटियों से छोटे-छोटे भागों में बांट दिया गया है।

बीयर की एक फैक्ट्री ने जब प्लास्टिक की पेटियां प्रयोग करनी शुरू कर दीं तब इस स्कूल को लकड़ी की ये पेटियां मुफ्त में मिल गई थीं। ये गहरे हरे रंग के डिब्बे—जो कुर्सी, मेज़, किताबों की अलमारी, विभाजक आदि की तरह प्रयोग में लाये जाते हैं—स्कूल में घुसने पर सबसे पहले ध्यान आकर्षित करते हैं। शीघ्र ही ये सामान्य और परिचित से लगने लगते हैं। ये सादे, मज़बूत, सस्ते डिब्बे स्कूल की भावना को व्यक्त करते प्रतीत होते हैं। मैं तो इनके बिना स्कूल की कल्पना ही नहीं कर सकता ।

स्कूल के सामान बहुत सादे और सस्ते हैं। अधिकतर शिक्षकों को अगर ऐसे स्कूल में काम करना पड़े तो वे अपने को बहुत गया गुज़रा महसूस करेंगे। ऑफिस में एक सादा टाइपराइटर (बिजलीवाला नहीं), एक टेप रिकार्डर और एक डुप्लीकेटर है। मुख्य हॉल में एक फ्रिज़ और स्टोव है जिस पर कभी-कभी बच्चे खाना बनाते हैं। वैसे आम तौर पर वे डेनिश सेंडविच ही खाते हैं। स्कूल में एक छोटा सा लेकिन अच्छी किताबों का संग्रह है। वर्कशाप में लकड़ी और धातु का काम करने के औज़ार तथा ऑक्सी-ऐसीटलीन से काटने और वेल्ड करने के उपकरण हैं। खेल और पहेलियों का भी छोटा सा संग्रह है। इनमें कुछ विज्ञान और गणित की किताबें हैं और कुछ पाठ्यपुस्तकें हैं। विज्ञान और गणित के उपकरण, जिन्हें आम तौर पर स्कूलों के लिये अत्यंत आवश्यक समझा जाता है, वे मुझे यहां नहीं दिखे।

शिल्पकला के उपकरण भी ज़्यादा नहीं हैं। मुझे याद नहीं पड़ता कि मैंने किसी बच्चे को मिट्टी, रंग या ड्राइंग बोर्ड आदि इस्तेमाल करते देखा हो। लेकिन स्कूल में बच्चों के द्वारा रंगे गए कुछ चित्र तथा अन्य चीज़ें थीं जिसका मतलब था कि स्कूल में या तो कहीं रंग थे या फिर बच्चों को जब ज़रूरत पड़ती, उन्हें रंग मिल सकते थे। वहां एक सिलाई मशीन और दो-तीन हथकर्घे भी हैं।

एक बार पहले जब मैं स्कूल गया था तब वहां बहुत सी चिड़िये और छोटे जानवर थे। लेकिन अगली बार तक वे सब जा चुके थे और उनकी जगह टैंकों में बहुत तरह की मछलियां थीं। इन टैंकों को बच्चों ने स्वयं या बड़ों की थोड़ी मदद से बनाया था। कुछ बच्चे तो घंटों इन मछलियों को देखते रहते थे। वहां गेंदें, कूदने की रस्सियां आदि खेलने के सामान हैं। व्यायामशाला में एक कूदने का गद्दा है। संगीत कक्ष में एक घिसा-पिटा, पुराना पियानो, कुछ गिटार, एक शिक्षक का बनाया हुआ एक वाद्य-यंत्र और अनेक साईज़ों के ड्रम हैं।

यह सूची अभी किसी भी तरह पूरी नहीं है। वहां शायद कुछ ऐसी चीज़ें भी थीं, जो मुझे नज़र नहीं आईं या जिनके बारे में मुझे पता नहीं चला। जो कुछ मैंने देखा उससे तीन बातें स्पष्ट हैं। पहली तो यह, कि पारंपरिक स्कूलों में मिलने वाले सामान और उपकरणों का एक छोटा सा अंश ही इस स्कूल में है। दूसरा कि इस स्कूल में जो भी उपकरण हैं, बच्चों के प्रयोग करने के लिए हैं। आम स्कूलों की तरह तालाबंद अल्मारियां नहीं हैं और न ही लाइब्रेरी से किताबें लेने में कोई ताम-झाम होता है। और तीसरी, सबसे महत्वपूर्ण बात जो यहां आकर समझ में आती है

कि अगर कोई 'ऐसी काम करने वाली जगह,' बच्चों के लिये शुरू करना चाहे तो उसे ज्यादा पैसा खर्च करने की ज़रूरत नहीं है। बच्चों को काम करने के लिये बहुत से सज़ावटी सामान की आवश्यकता नहीं होती।

शुरू-शुरू में बच्चों के गणित व विज्ञान की प्रयोगशालाओं की तरफ रुझान का कारण यह था कि ये सामान्यत: दिये जाने वाले स्कूल के काम से कहीं बेहतर थीं जैसे—शिक्षक को सुनना, वर्क-बुक भरना आदि। लेकिन अगर बच्चों के पास करने के लिये कुछ अच्छे विकल्प हों तो शायद ही वे इन प्रयोगशालाओं में अधिक समय बिताएं।

सच्चाई तो यह है कि स्कूल में ज़्यादा सामान नहीं होने का एक कारण स्कूल के पास पर्याप्त पैसा न होना भी है। ऐसी कुछ चीज़ें हैं जिन्हें स्कूल बच्चों और शिक्षकों के लिये खरीदना चाहता, अगर उसके पास पैसा होता। यह भी है कि बच्चे और शिक्षक अगर कुछ चीज़ों को प्राप्त करने का निश्चय कर लेते हैं तो वे उन्हें उधार लेने या सस्ते में खरीदने के मार्ग भी खोज लेते हैं। अंतत: अगर स्कूल के पास पैसा होता भी तो शायद बच्चे और शिक्षक मिलकर इस निष्कर्ष पर पहुंचते कि सामान से अधिक अन्य किन रुचिकर कार्यों में इसे खर्च किया जा सकता है।

स्कूल कोपेनहेगन में और उसके आस पास बहुत सी यात्राएं करता है, यहां तक कि बच्चों के एक ग्रुप ने स्वीडन के पार पैदल यात्रा की। ज़्यादा पैसा होगा तो शायद वे और ज़्यादा यात्राएं करेंगे।

उपस्थिति की भी चर्चा कर ली जाए। अन्य स्थानों की तरह

डेनमार्क में भी कानूनन बच्चों का स्कूल जाना अनिवार्य है। और शायद बहुत से स्कूलों में इस कानून का सख्ती और कठोरता से पालन किया जाता होगा। इस स्कूल में ऐसा नहीं है। स्कूल में उपस्थिति का रिकार्ड रहता है, मगर इसका अर्थ यह नहीं है कि रोज़ उपस्थिति अंकित की जाती हो या किसी निश्चित समय स्कूल में सब का उपस्थित रहना आवश्यक हो। लेकिन किसी भी दिन किसी एक शिक्षक का यह काम होता है कि वह देखे कि कौन स्कूल में है और कौन नहीं। यह चिंता का या घर फोन करने का विषय नहीं बन जाता। यह मान लिया

जाता है कि बच्चे के स्कूल नहीं आने का कोई उचित कारण होगा और वह जहां भी है, कुछ सार्थक ही कर रहा होगा।

वैसे यह स्कूल एक इतना खुला और अंतरंग समुदाय है कि किसी न किसी को अवश्य पता होता है कि बच्चा अगर स्कूल में नहीं है तो कहां है और क्या कर रहा है। एक दो दिन कोई नहीं आता है तो आने के बाद वह सबको ज़रूर बताता है कि उसने क्या किया। ऐसा तो कभी कभार ही होता होगा कि एक दो दिन बच्चा स्कूल नहीं आए और किसी को कारण का पता न हो। अगर ज़्यादा दिन कोई नहीं आए तो शायद शिक्षक भी मालूम करने लगते होंगे।

एक बार जब एक बच्चा कुछ लंबे समय तक स्कूल नहीं आया, तब वे सोचने लगे थे कि उसे वापस कैसे बुलाया जाए। लेकिन बच्चों को स्कूल न आने की आज़ादी है, अगर वे समझते हैं कि उनके पास इसकी वाज़िब वज़ह है। न तो उन्हें इसके लिये कोई इज़ाजत लेनी होती है और न ही आने के बाद कोई सफाई पेश करनी होती है। दूसरे—स्कूलों, कॉलेजों के विद्यार्थियों की तरह वापस आने पर उन्हें अनुपस्थित रहने के समय उन्होंने क्या-क्या किया, इसका लिखकर ब्योरा नहीं देना होता।

मेरा इस स्कूल में हमेशा वसंत ऋतु में मई के मध्य या अंत में ही जाना हुआ। लंबी, अंधेरी, शीत ऋतु के बाद जब सूरज निकलता है तो स्कैनडिनेवियन लोग बाहर निकलना पसंद करते हैं। वर्ष के इस समय किसी भी दिन देखें तो स्कूल में लगभग आधे ही बच्चे मौज़ूद होते हैं। शीत ऋतु में ज़्यादातर सारे बच्चे आते हैं। बच्चे क्या करते हैं? जो कुछ मैंने वहां देखा है उसमें से कुछ चीज़ों के बारे में बताऊंगा, जिससे कि स्कूल के झुकाव

का, वहां होने वाली भांति-भांति की गतिविधियों का पता चलता है। कुछ काम सब बच्चे एक साथ करते हैं।

दो साल पहले स्कूल की मीटिंग में काफी विचार-विमर्श के बाद निश्चय किया गया कि एक दिन दोपहर का भोजन सब लोग एक साथ करेंगे। इसके लिये कुछ पैसा अलग रखा जाएगा। कुछ लोग बाजार से सामान लाएंगे, कुछ खाना बनाएंगे, कुछ लोग परोसेंगे और सब साथ खाएंगे। यह एक हो-हल्ले, दोस्ती और रौनक से भरा दृश्य था।

स्कूल में अक्सर सामान्य सभाएं होती हैं जिनमें बच्चे और शिक्षक एक साथ भाग लेते हैं। इनमें सभी लोग बोल सकते हैं और वोट दे सकते हैं। सब के वोट बराबर माने जाते हैं। कुछ स्कूलों में जहां ऐसा होता है, वहां 10 वर्ष से कम आयु के बच्चे सक्रिय भाग नहीं ले पाते। लेकिन इस स्कूल में ऐसा नहीं है। छोटे बच्चे भी काफी बोलते हैं।

कोशिश यही रहती है कि मतदान के स्थान पर, आपसी विचार-विमर्श से निर्णय लिए जाएं, जिनसे सभी लोग या अधिक लोग सहमत हों। वे आपसी संबंधों तथा समस्याओं के बारे में भी बातें करते हैं। जैसे—किसी का किसी को चिढ़ाना या परेशान करना। वे स्कूल की नीति और यहां तक कि खर्च के बारे में भी चर्चा करते हैं।

एक बात जिसके बारे में अक्सर काफी चर्चा होती है, वह है स्कूल का नक्शा। मुख्य हॉल को जिस तरह बीयर के डिब्बों से छोटे-छोटे भागों में बांटा गया है, इस बारे में बहुत सी मीटिंगें होती हैं। लोग बताते हैं कि वर्तमान नक्शा उन्हें क्यों पसंद नहीं है। बच्चे नाप-ज़ोख कर नए नक्शे बनाते हैं। फिर मीटिंग में एक

नई योजना निश्चित की जाती है। उसके बाद ज़ोर-शोर से काम शुरू होता है। सारा सामान और किताबें बाहर ले जाई जाती हैं, विभाजक गिरा दिए जाते हैं और फर्नीचर हटा दिया जाता है। फिर स्कूल की अच्छी तरह सफाई की जाती है। उसके बाद बीयर के डिब्बे को नई योजना के अनुसार लगाया जाता है और किताबें तथा बाकी सामान ठीक से रख दिए जाते हैं।

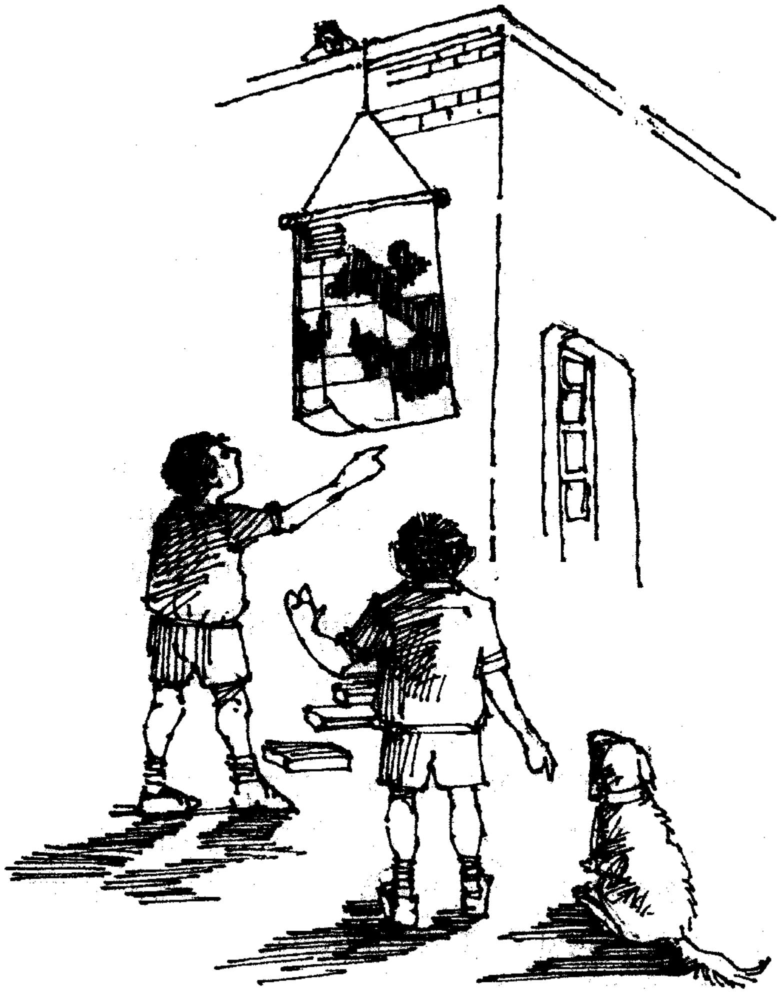

यह एक बहुत बड़ा काम होता है और बच्चों को इसमें भाग लेना अच्छा लगता है। इस समय वे बहुत उत्साहित रहते हैं। वर्षों पहले मैंने एक युवा आर्किटेक्ट से कहा था कि एक आदर्श स्कूल कभी पूरा नहीं होना चाहिए। उसमें यह संभावना होनी चाहिए कि बच्चे उसे फिर से डिज़ाइन कर सकें, बार-बार बना सकें। न्यू लिटिल स्कूल ऐसा ही स्कूल है।

स्कूल की दैनिक दिनचर्या का बहुत महत्वपूर्ण भाग है सुबह का व्यायाम और नृत्य। स्कूल की व्यायामशाला एक स्क्वैश के कोर्ट से थोड़ा बड़ा, नीची छत का कमरा है। वहां सिर्फ एक मोटी दरी और दो ड्रम हैं। रोज़ सुबह नृत्य एवं संगीत में प्रशिक्षित एक शिक्षक और अधिकांश बच्चे व्यायामशाला में मिलते हैं। शिक्षक ड्रम पर एक तेज़ जोशीली धुन बजाता है और बच्चे कूदना, थिरकना और नाचना शुरू कर देते हैं। एक सत्र कभी भी दूसरे जैसा नहीं होता। बच्चे उन्मुक्त होकर अपने मन से लय में थिरकते हैं और एक लय दूसरे को आगे बढ़ाता जाता है। बच्चे पहले के लय-ताल में से जो उन्हें अच्छे लगते हैं, अक्सर फिर से करते हैं।

लेकिन बच्चे और शिक्षक जैसे-जैसे आगे बढ़ते जाते हैं नए, फुर्तीले और खूबसूरत लय-ताल ईज़ाद करते जाते हैं। नई धुनें, नई लय और ताल को जन्म देती हैं। कभी-कभी कोई बच्चा ड्रम बजाता है या फिर एक ड्रम कोई बच्चा बजाता है और दूसरा शिक्षक। ऐसे दृश्य के सौन्दर्य, आनंद और ऊर्जा का शब्दों में वर्णन कर पाना असंभव है। मैंने ऐसा कुछ कभी देखा ही नहीं। अधिकांश बच्चे खूब स्वस्थ और जोश से परिपूर्ण हैं। यह देर तक चलता रहता है और बच्चे अपनी काफी ऊर्जा यहां व्यय

कर देते हैं। लेकिन ऐसा नहीं कि सारी ही!

हालांकि स्कूल में शांत और चिंतनशील दिन भी होते हैं, लेकिन ज़्यादातर वक्त बच्चे खूब बातें करते हैं, शोर मचाते हैं और सक्रिय व मिलनसार रहते हैं। अमेरिकन स्कूलों में तो यहां के बच्चों से काफी कम सक्रिय बच्चों को ही अत्यधिक क्रियाशील बताकर उन्हें नशीली दवाईयां दे दी जाती हैं। यह नृत्य सत्र स्कूल की प्रमुख सुव्यवस्थित खेलकूद की गतिविधि है। स्कूल से थोड़ी दूर, लगभग दस मिनट पैदल की दूरी पर, एक पार्क है जहां फुटबॉल का मैदान है। बड़े लड़के, जो फुटबॉल खेलना पसंद करते हैं और एक बड़ा खिलाड़ी बनने का सपना देखते हैं, अक्सर यहां खेलने आते हैं।

वेल्डिंग का सामान आने से पहले स्कूल में एक बुंसन बर्नर था। एक दिन लगभग एक घंटे तक तीन-चार बच्चे उसको घेर कर बैठे रहे, मैं भी उनके बीच था। हम सबके पास एक-एक प्लास था जिससे एक कील पकड़ कर हम गर्म कर रहे थे। जब किसी की कील गर्म होकर लाल व मुलायम हो जाती थी तो वह उसे बाहर निकाल कर उसके साथ कुछ करता था। हममें से ज़्यादातर अपनी-अपनी कीलों को रेल की पटरी के एक टुकड़े पर हथौड़े से पीट रहे थे। मैं भी अपनी कील से कुछ आकृतियां बनाने की कोशिश कर रहा था, और यह देखना चाह रहा था कि क्या दो कीलों को पीट कर आपस में जोड़ा जा सकता है? मैं कर नहीं पाया।

एक नया लड़का, जो मुश्किल से सात-आठ साल का होगा, एक ही काम बार-बार कर रहा था। वह कील को लाल गर्म करके एक लकड़ी के टुकड़े में घुसा देता, और लकड़ी जल

कर धुआं छोड़ने लगती। अगर कोई बच्चा उसकी कील से अपनी कील टकरा देता या आग की लौ का ज़्यादा हिस्सा ले लेता तो वह इतनी जोर से दहाड़ता कि इससे दूसरे बच्चों को डर लगता हो या नहीं, मैं तो बुरी तरह कांप जाता था। मैंने किसी बच्चे में कभी इतना आक्रामक गुस्सा नहीं देखा। मैं तो यह सोचने की हिम्मत भी नहीं कर सकता था कि जब वह बच्चा अपनी कील लकड़ी में मारता था तब वह क्या कल्पना कर रहा होता होगा। मेरा उससे सिर्फ इतना ही सम्पर्क हुआ था।

दो साल बाद जब मैं अगली बार स्कूल गया तब वह एक शांत, उदार और प्रसन्नचित्त बच्चा था। वह धातु के साथ काम करने का व वेल्डिंग का सबसे कुशल कारीगर भी था। मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ और खुशी भी हुई कि उसने मुझे एक दोस्त की तरह याद रखा था।

संगीत का कक्ष। एक शिक्षक, जो एक संगीतज्ञ और कुशल पियानोवादक था, एक बच्चे को बिजली के गिटार पर कोई धुन बजाना सिखा रहा था। उसने बताया, फिर प्रदर्शित किया, फिर दोनों ने एक साथ बजाया। दो छोटे बच्चे भी उनके साथ ड्रम बजाने लगे। वे बिल्कुल भी ठीक से नहीं बजा रहे थे, लेकिन किसी ने उन्हें बजाने से मना नहीं किया न ही गुस्से से इस तरह देखा जैसे कह रहे हों, ''देखते नहीं, हम काम में लगे हैं''। मेरी तरह कमरे में दो तीन बच्चे और थे, जो सिर्फ देख रहे थे। जब-जब पियानो और गिटार लय में आ जाते मैं साथ में सीटी बजाने लगता।

एक दूसरी बच्ची खिड़की पर बैठकर बाहर ताक रही थी। जो लोग वहां थे, उन सबके कौशल और ध्यान का स्तर अलग-

अलग था, लेकिन सबको भाग लेने की इज़ाजत थी। जैसा कि शिक्षाविद श्रीमती स्टेलीब्रेस ने लिखा है, ''ध्यान से देखना भी एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। बच्चे की इस गौर करने की आवश्यकता का सम्मान करना चाहिए और अगर कोई बच्चा ध्यान से दूसरों को देख रहा हो तो उसका ध्यान हटाना नहीं चाहिए और न ही उसे 'बढ़ावा' देना चाहिए... कुछ बच्चे कोई काम स्वयं करने से पहले दूसरों को करते हुए देखना चाहते हैं, और वे क्या करेंगे

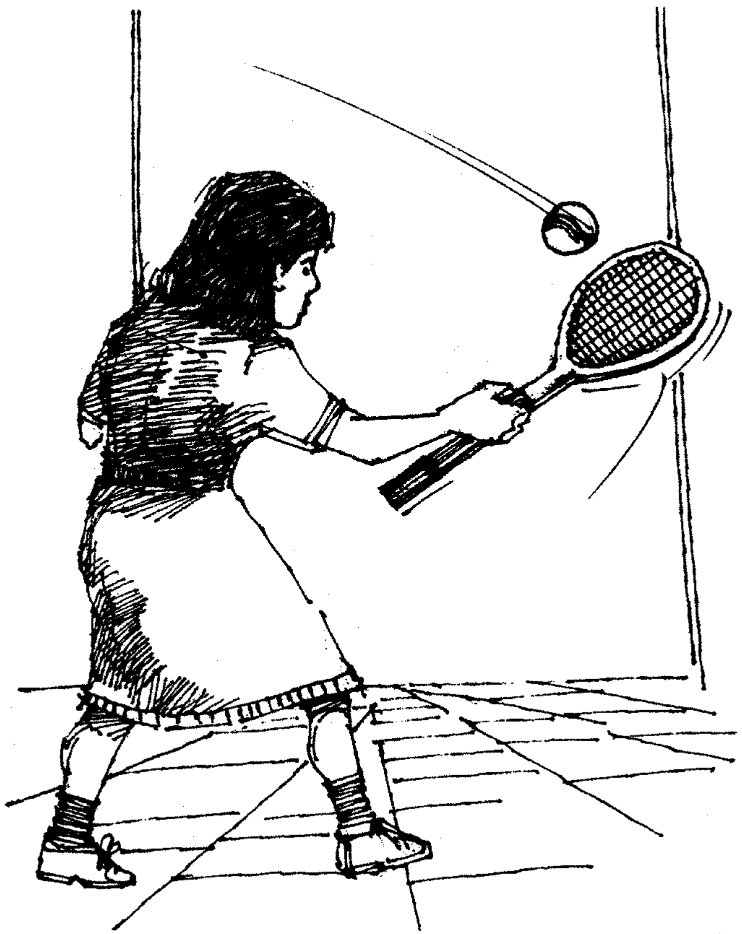

उसके बारे में सोच-विचार करना चाहते हैं।'' न्यू लिटिल स्कूल में सभी लोग यह बात समझते हैं।

सभागार में कोई फर्नीचर नहीं है। जब मीटिंग होती है तो लोग कमरे के एक सिरे पर दीवार में बनी हुई सीटों पर बैठते हैं, अन्यथा कमरा बिल्कुल खाली रहता है। एक चौदह वर्ष की लड़की कई दिन लगातार एक-एक घंटे तक इसकी दीवार पर टेनिस बॉल को टप्पा खिलाती और पकड़ती रहती, यह देखने के लिए कि वह बिना गिराए एक साथ कितनी बार बॉल दीवार पर मार सकती है—अक्सर बीस और चालीस के बीच। एक दूसरे अवसर पर करीब आठ से बारह वर्ष की छह लड़कियां रोज़ यहां एक-दो घंटे रस्सी कूदती थीं। वे खेल के नियमों को बदलती रहती थीं और बहुत गंभीरता और ध्यान से खेलती थीं।

एक छोटा लड़का जो, स्कूल में नया था, बहुत ही आक्रामक और गुस्सैल था। वह उस छोटे से ग्रुप में से था जिसे बच्चे स्वयं ही 'आतंकवादी' के नाम से पुकारते थे। एक बार वह एक गत्ते के डिब्बे को डंडे से मार कर खेल रहा था। उसने एक दस वर्ष की लड़की की आंख में बहुत ज़ोर से मार दिया और अपनी करतूत को देखे बिना भाग गया। लड़की अपना हाथ आंख पर रख दर्द से दोहरी हो गई। दूसरे बच्चों ने और शिक्षक ने भी यह देखा। उसके पास के लोगों ने उससे पूछा कि वह ठीक तो है न? और उसे सांत्वना और सहानुभूति दी। बस और कुछ नहीं हुआ।

अन्य किसी भी स्कूल में ऐसा कुछ हुआ होता तो उस लड़की ने शोर मचा दिया होता। दूसरे बच्चों ने भी जाकर शिक्षक से शिकायत की होती। उस छोटे बच्चे को खींच का

लाया जाता। उससे माफी मंगवाई जाती और उसे सज़ा दी जाती। लेकिन यहां बड़ों ने, बच्चों ने और उस लड़की ने भी यही सोचा कि उस उत्पाती बच्चे ने जानबूझ कर नहीं मारा, शायद वह स्वयं भी डरा हुआ और लज्जित होगा, उसे और सज़ा क्यों दी जाए। और शर्मिन्दा क्यों किया जाए? उसे और अधिक प्रबलता से यह एहसास क्यों करवाया जाए कि वह किसी लायक नहीं है, जबकि शायद उसके मन में घर की हुई इसी भावना ने उससे ऐसी हरकत करवाई? इसके स्थान पर उसे यह महसूस करने में सहायता क्यों न की जाए कि यहां उसे दण्डित होने के बारे में डरने की आवश्यकता नहीं है?

इस तरह से इसी स्कूल में आतंकवादियों को सभ्य बनाया जाता है, न कि भाषण और सज़ा से। वयस्क लोग बच्चों के साथ सहनशील और क्षमाशील होते हैं और उनपर विश्वास करते हैं। समय के साथ बच्चे एक दूसरे के साथ भी ऐसे ही बन जाते हैं। ऐसा भी नहीं है कि अगर कोई किसी बच्चे का खाना खा ले या उसकी कोई चीज़ छीन ले तो वे आपस में लड़ते-झगड़ते, चिल्लाते नहीं। वे एक दूसरे से नाराज़ होते हैं लेकिन अन्य स्कूलों की तरह न तो वे एक दूसरे के बारे में बातें बनाते हैं, न शिक्षक से शिकायत करते हैं और न ही ज्यादा समय तक दुर्भावना या नाराज़गी रखते हैं।

यह क्यों सफल है

इस विवरण से कुछ हद तक यह तो समझा जा सकता है कि बच्चे यहां प्रसन्न और फुर्तीले क्यों हैं। लेकिन यह बात समझ में नहीं आती कि बच्चे स्कूल कार्य में इतने अच्छे कैसे हो जाते हैं।

इसका क्या कारण है? इसका उत्तर एक शिक्षक ने दिया — ''अधिकतर हम बातें करते हैं और एक दूसरे को सुनते हैं।'' और यही अधिकतर वे करते भी हैं। इसका अर्थ यह नहीं कि शिक्षक बोलते हैं और बच्चे सुनते हैं। यहां लेक्चर या ऐसा कुछ और नहीं होता। अन्य नई धारा के स्कूलों की तरह शिक्षक यहां 'विचार विमर्श' भी आयोजित नहीं करते। यहां सिर्फ बच्चों में आपस में या बच्चों और बड़ों के बीच बातचीत होती है।

बड़ों और बच्चों के बीच यह बातचीत कैसे शुरू होती है? जैसा कि प्रायः होता है, जब एक बच्चा एक बड़े व्यक्ति के साथ कोई काम कर रहा होता है तो वे यह करते-करते आपस में बात करना शुरू कर देते हैं। किसी समय पर दूसरे लोग भी इसमें शामिल हो जाते हैं। वार्तालाप, एक असल वार्तालाप की तरह कभी इस ओर बढ़ता है, कभी उस ओर। कुछ लोग छोड़ जाते हैं, कुछ अन्य लोग शामिल हो जाते हैं। यह बात करता हुआ

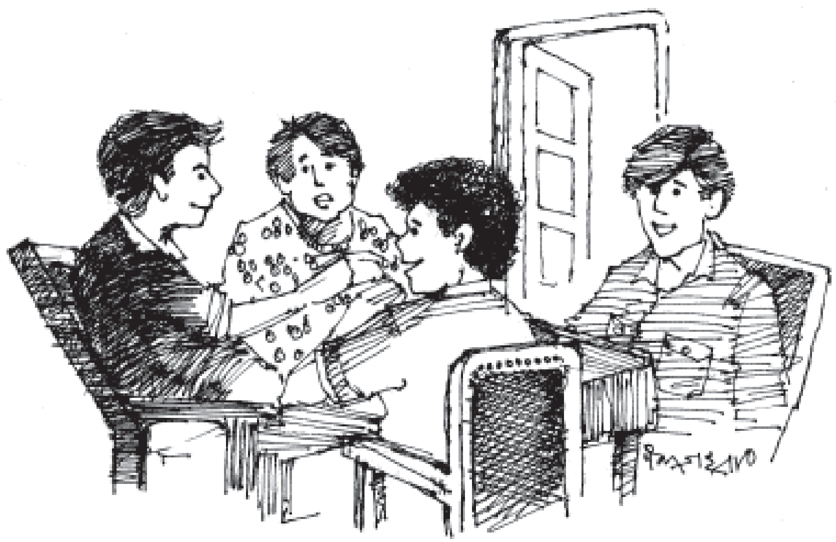

समूह दो या तीन समूहों में बंट जाता है। वार्तालाप कभी खत्म नहीं होता। कुछ देर के लिए यह थम सकता है, लेकिन विचार चलता रहता है और कभी न कभी बाद में यह फिर शुरू हो जाता है।

बच्चों के विचारों के साथ यहां उनके कार्य में भी 'अनुभव की निरंतरता' है,(जिसका जिक्र डेनिसन ने 'लाइव्स ऑफ चिल्ड्रन' नाम की किताब में किया है) जो बच्चों को अधिकतर स्कूलों में नहीं मिलती और जहां विचारधारा में बार-बार घंटी, कक्षाओं, पाठ्क्रम आदि से व्यवधान आता रहता है। कभी छोटे बच्चे बड़े बच्चों की और कभी बड़े बच्चे छोटे बच्चों की बातचीत सुनते हैं। यहां तक कि शिक्षकों की मीटिंग से भी बच्चों को दूर नहीं किया जाता। उन्हें बीच में आने के लिए प्रोत्साहित तो नहीं किया जाता, लेकिन अगर कोई आ जाता है तो उसे जाने को भी नहीं कहा जाता।

कृपा इस विवरण को स्कूल चलाने की विधि या फार्मूला न समझें, जो शिक्षक प्रशिक्षण कॉलेजों में सिखलाया जा सकता हो। यह एक मानवीय समुदाय है और इसके चल पाने में इसमें काम करने वाले वयस्कों का बड़ा योगदान है। यहां के शिक्षकों का ग्रुप कम से कम तीन बातों में बहुत असाधारण है। पहली बात तो यह कि इन लोगों में पढ़ाने के अतिरिक्त अन्य कई प्रकार की योग्यताएं हैं। इनमें से ज़्यादातर ने शिक्षण में आने से पहले बहुत से अन्य प्रकार के कार्य किए हैं, कई अनुभव प्राप्त किए हैं और वे अपनी इस योग्यता और अनुभव को स्कूल में लाते हैं। ये लोग बहुत से काम कर सकते हैं, चीज़ें बना सकते हैं, और चीज़ों को ठीक कर सकते हैं। बच्चों के लिए यह बहुत

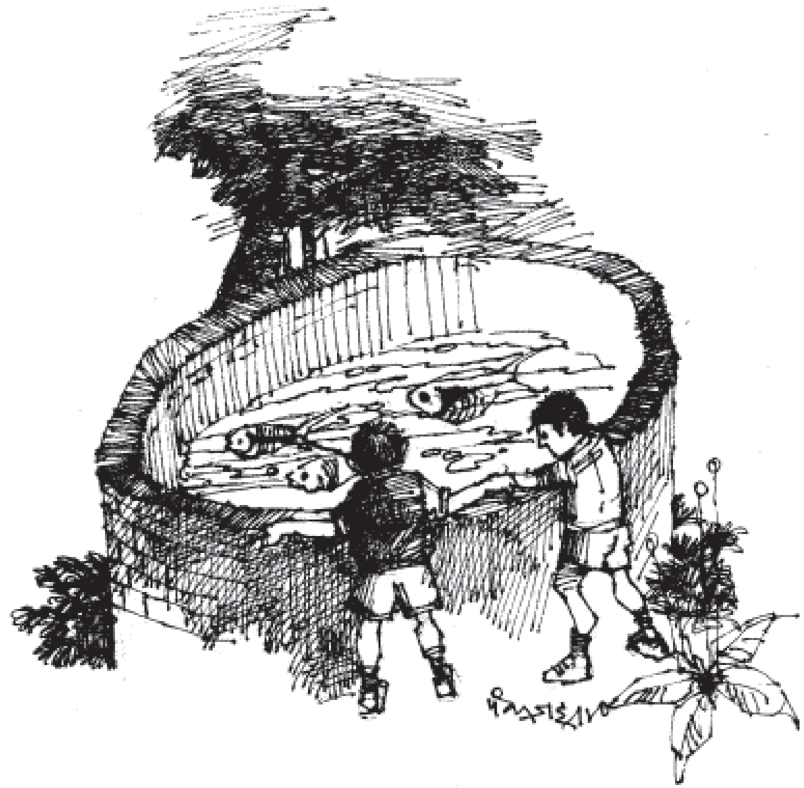

महत्वपूर्ण होता है; उन्हें कुछ न कुछ करना अच्छा लगता है और वे उन लोगों को पसंद करते तथा उनकी ओर आकर्षित होते हैं जो तरह-तरह के काम करना जानते है। बच्चों में इन शिक्षकों के प्रति इनकी योग्यता के कारण ही एक स्वाभाविक सम्मान आ जाता है।

आजकल के स्वतंत्र या वैकल्पिक विद्यालयों में बहुत सी समस्याएं अक्सर शिक्षकों की सीमित क्षमताओं की वज़ह से आती हैं। युवा लोग अक्सर बहुत ईमानदारी के साथ मुझे विश्वास दिलाते हैं कि वे बच्चों का बहुत सम्मान करते हैं और उनके साथ खुले विद्यालय में काम करना बहुत पसंद करते हैं। जब मैं

पूछता हूं ''तुम क्या कर सकते हो?'' तो उन्हें हैरानी होती है। ज्यादातर तो वे कुछ नहीं कर सकते, वर्षों से वे विद्यार्थी ही रहे हैं, इसके अलावा कुछ उन्होंने किया ही नहीं है। लेकिन सिर्फ प्यार और सद्भावना ही काफी नहीं है। अधिकांश बच्चे अधिकांश बार एक मुट्ठी निपुणता के लिए एक टोकरा प्यार छोड़ देंगे। इससे आगे न्यू लिटिल स्कूल के शिक्षक बुद्धिमान, जागरूक और जिज्ञासु हैं। ये लोग संसार के बारे में बहुत कुछ जानते और उस पर सोचते हैं।

इसके विपरीत अमेरिकन शिक्षकों के एक बड़े सर्वेक्षण ने यह पाया है कि अधिकतर शिक्षकों को न तो ज़्यादा जानकारी होती है और न ही वे जानने को उत्सुक ही रहते हैं। वे बहुत कम पढ़ते हैं और रीडर्स डाइजेस्ट (अमेरिका व अन्य देशों में पढ़ी जाने वाली एक आम पत्रिका) उनकी पसंदीदा पत्रिका है। बहुत से शिक्षक तो साल में सिर्फ एक पुस्तक पढ़ते हैं, और जो लोग ज़्यादा पढ़ते हैं वे भी सिर्फ हल्के-फुल्के उपन्यास ही पढ़ते हैं।

आधुनिक देशों के औसत व्यक्ति की तरह न तो वे ज़्यादा जानते हैं और न ही अधिक कुछ कर सकते हैं। जो कुछ वे जानते भी हैं या कर भी सकते हैं उसके बारे में स्कूल में न तो कभी चर्चा करते हैं, न ही उसका उपयोग करते हैं। क्या उन लोगों के साथ स्वस्थ फुर्तीले और उत्साही बच्चे समय बिताना पसन्द करेंगे?

यह भी महत्वपूर्ण है कि न्यू लिटिल स्कूल के शिक्षक विरक्त (एलियनेटेड) नहीं हैं। उनके मन में अपने देश डेनमार्क के प्रति नफरत, डर नहीं है। हां, यहां ऐसा बहुत कुछ है जो

उन्हें नापसंद है और जिसके बदलाव की उम्मीद वे रखते हैं। लेकिन उन्हें यह देश पसंद है और यहां रहना उन्हें अच्छा लगता है। उन्हें संसार से भी घृणा नहीं है। अपनी सब कमियों के बावज़ूद यह एक सुंदर वैविध्यपूर्ण, मन मोहने वाली जगह है जिसमें बहुत सी उत्साहजनक, रोचक और लाभप्रद चीज़ें करने के लिए है।

ये लोग अपनी स्वयं की ज़िंदगी से भी त्रस्त नहीं हैं। इन

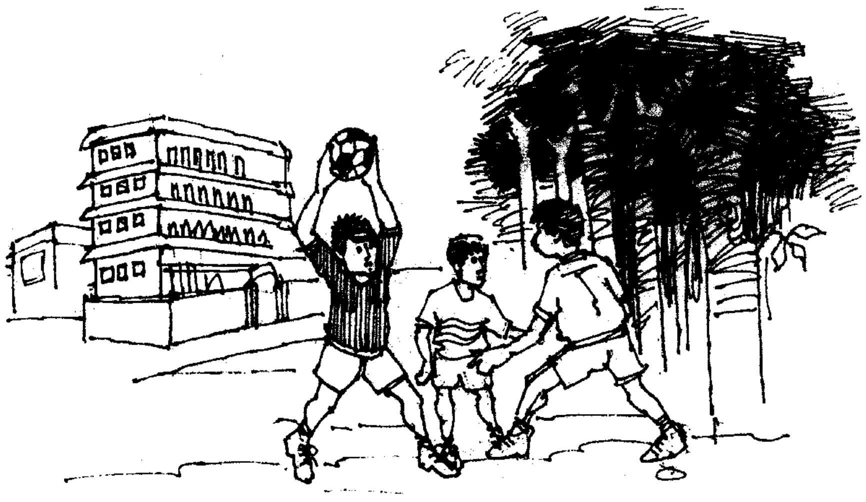

लागों में जोश है, ताकत है। वे बच्चों को यह कह कर कि बचपन जीवन का सबसे अच्छा समय है, ज़्यादा से ज़्यादा समय तक बच्चा बनाये रखना नहीं चाहते। वे जानते हैं कि बच्चे जल्दी बड़े और शक्तिवान हो कर दुनिया को देखना और बहुत से काम करना चाहते हैं। शिक्षक प्रसन्नता से इसमें उनकी मदद करने को तैयार रहते है।

वैकल्पिक स्कूलों के विषय में यह बात हमेशा सच नहीं होती। अक्सर ये स्कूल शिक्षकों के रूप में ऐसे युवाओं को अपनी ओर आकर्षित कर लेते हैं जो अपने ज़िंदगी अपने देश तथा अपने आस पास की दुनिया से कट चुके होते हैं। मुझे उनके साथ सहानुभूति है और मैं समझ सकता हूं कि उनके साथ ऐसा क्यों होता है। लेकिन ऐसे शिक्षक बच्चों की अधिक मदद नहीं कर सकते।

बच्चों की दुनिया से कोई लड़ाई नहीं होती। उनके लिए दुनिया है, और वे इस दुनिया में आना चाहते हैं। बच्चों को यह सुनना अच्छा नहीं लगता कि यह दुनिया कितनी बेकार है, यहां करने के काबिल कुछ नहीं है, और इससे बचकर कितना दूर भागा जा सकता है।

सम्भवतः सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि न्यू लिटिल स्कूल के शिक्षक खुले और सच्चे हैं। अर्थात, ये लोग उन सभी विषयों पर बात करने के लिए तत्पर रहते हैं जिन पर बच्चे बात करना चाहते हैं। वे अपने सच्चे विचार प्रकट करते हैं और कोई बात अगर वे नहीं जानते तो स्वीकार कर लेते हैं। ज़्यादातर शिक्षकों के साथ ऐसा नहीं है।

सर्वेक्षण से यह स्पष्ट होता है कि 90% अमेरिकी शिक्षक विवादास्पद विषयों के बारे में स्कूल में बात करने में विश्वास नहीं करते तथा बच्चों को भी इन विषयों के बारे में बात नहीं करने देते। हालांकि वे अच्छी तरह जानते हैं कि बच्चों की इन विषयों में सबसे अधिक रुचि होती है। इसीलिए पारंपरिक स्कूलों में बच्चे ज़्यादा बात नहीं कर सकते और जब करते भी हैं तब वे जो चाहते हैं वह बात नहीं कर सकते और ईमानदारी से नहीं कर सकते।

इसके अलावा शिक्षकों को प्रशिक्षण में बार-बार सिखाया जाता है कि अपनी अज्ञानता, अनिश्चय और उलझन को कभी स्वीकार नहीं करें। सबसे अहम बात यह है कि उनमें कूट-कूट कर यह भरा जाता है कि छात्रों से एक पेशेवर दूरी रखें और अपनी व्यक्तिगत ज़िंदगी और भावनाओं के बारे में कभी खुलकर बात नहीं करें। लेकिन यही वे बातें हैं जिनमें बच्चों की सबसे ज़्यादा जिज्ञासा होती है, क्योंकि इसी से वे महसूस कर सकते हैं कि बड़ा होना क्या होता है।

न्यू लिटिल स्कूल के छात्र आगे चलकर जब सामान्य स्कूलों में जाते हैं तो बहुत अच्छा करते हैं। इसके कई कारण हैं। वे दुनिया के बारे में उत्सुक होते हैं और इसके बारे में जान सकने का कौशल और विश्वास उनमें होता है। वर्षों तक रोज़

कई घंटे सक्रिय रूप से, गंभीरतापूर्वक बातें करते हुए और बहुत से लोगों को सुनते हुए वे भाषा के उपयोग में सक्षम हो जाते हैं और यही प्रारंभिक वर्षों में स्कूल की प्रमुख भूमिका है। अब तक स्कूल में तथा बाहर बहुत सी विषम सामाजिक परिस्थितियों का सामना करते आए ये बच्चे सामान्य स्कूलों में सीमित चुनौतियों को आसानी से हल कर सकते हैं।

आखिरकार, कोई भी बच्चा जो अपने आंख-कान खुले रखता है, जल्दी ही समझ लेता है कि पारंपरिक स्कूल का शिक्षक क्या चाहता है। लेकिन सबसे बड़ा कारण कि ये बच्चे, इन स्कूलों के ही पारम्परिक तौर से पढ़ाए गए अपने मित्रों से ज्यादा अच्छा कर पाते हैं, यह है कि ये उनसे कहीं ज़्यादा जानते हैं।

यह पूछा जाता है कि इतने वर्षों तक जो चाहा, वह करने के बाद बच्चे इन सामान्य स्कूलों को कैसे सह पाते हैं? क्या वे इन्हें नापसंद नहीं करते? असल में वे इन्हें कतई पसंद नहीं करते। वे इन्हें बेतुका समझते हैं। लेकिन ये बच्चे चतुर और यथार्थवादी होते हैं। वे इतना तो अच्छी तरह समझते हैं कि दुनिया में कुछ करने या कुछ बनने के लिए कॉलेज और यूनिवर्सिटी ही एक मार्ग है और वे इस मार्ग में आने वाली कठिनाइयों का सामना करने को तैयार होते हैं। वे स्कूल से अपने लिए उपयोगी ज्ञान प्राप्त करने में भी अन्य बच्चों से ज्यादा समर्थ हैं।

हमें न्यू लिटिल स्कूल के विषय में सुनना चाहे कितना ही अच्छा क्यों न लगे, लेकिन हम यह नहीं भूल सकते कि यह भी आखिर एक स्कूल ही है। इससे भी अधिक काबिले गौर बात यह है कि यह एक ऐसा स्कूल है, जिसका अनुसरण दूसरे देशों

में तो क्या, डेनमार्क में भी बहुत कम स्कूलों ने किया है। प्रथम तो यह एक प्राइवेट स्कूल है और यह उस डेनिश सरकारी तंत्र का हिस्सा नहीं है, जिसमें ऐसा कोई दूसरा स्कूल न तो है और न ही बनाने की कोई योजना है। फिर भी इसका अधिकांश पैसा सरकार देती है। डेनमार्क में यह कानून है कि यदि किसी निश्चित संख्या में अभिभावक एक स्कूल शुरू करते हैं और एक वर्ष तक स्वयं ही उसे चला लेते हैं तो उस समय से सरकार इसके खर्च 85% का वहन करेगी। शेष 15% का प्रबंध उन्हें स्वयं करना होगा। यह एक कठिन कार्य है, क्योंकि इस देश में अगर बहुत लोग बहुत गरीब नहीं हैं तो बहुत लोग बहुत अमीर भी नहीं हैं।

दूसरी बात, यहां बच्चों की पढ़ाई के लिए खर्च करने का चलन भी नहीं है। इस कानून के तहत 40 छोटे स्वतंत्र स्कूल खोले गए हैं, जिनको लिटिल स्कूल कहा जाता है। किसी भी अन्य देश में ऐसा कानून नहीं है। सरकार के सहयोग के बिना न्यू लिटिल स्कूल का शायद अस्तित्व ही नहीं होता और अपने इस वर्तमान रूप में तो कदापि नहीं। तब इसे उन लोगों की सहायता और स्वीकृति पर निर्भर रहना पड़ता जो यहां के बच्चों के मां-बाप से कहीं ज्यादा अमीर हैं। लेकिन किसी भी देश में बहुत अमीर लोग किसी ऐसे स्कूल की सहायता नहीं करेंगे जो, इस बात में विश्वास रखता हो कि खुद आगे बढ़ने से अधिक महत्वपूर्ण है दूसरों का सहयोग करना, उनकी सहायता करना।

स्कूल इतने अनौपचारिक ढंग से इसलिए काम कर पाता है, क्योंकि बच्चे तथा अभिभावक स्वयं ही यह निश्चित कर लेते हैं कि कब वे स्कूल आएंगे और कितना समय वहां व्यतीत करेंगे।

इस जिले के स्कूल इंस्पेक्टर इस स्कूल का साथ देते हैं, और नहीं तो कम-से-कम उसके खिलाफ तो नहीं जाते। अगर यह स्कूल देश के किसी अन्य भाग में होता और कोई अन्य इंस्पेक्टर होता, तब यह स्कूल इतना भाग्यशाली नहीं होता, और फिर इसे बहुत सी बातों में कानून की लीक पर चलना पड़ता।

अन्ततः यह स्कूल बिना किसी कोशिश या चाह के भी विजेताओं यानि सफल विद्यार्थियों का स्कूल है। अगर अधिकांश बच्चों के बजाय थोड़े से बच्चे ही आगे के स्कूल में अच्छा करते, तो बहुत से अभिभावक शायद अपने बच्चों को यहां भेजना बंद कर देते। यहां तक कि शिक्षक भी, जिन्हें अब तो अपनी चुनी हुई राह के ठीक होने का विश्वास बन चुका है, शायद तब संदेह करने लगते।

मैंने न्यू लिटिल स्कूल का वर्णन, कुछ ऐसे मार्ग प्रदर्शित करने के लिए किया है जिनसे बच्चे और बड़े साथ रह सकें एवं काम कर सकें। एक दूसरे से अपनी बात कह सकें और एक दूसरे से सीख सकें। स्कूल एक ऐसी जगह हो, जो जोड़-तोड़, रिश्वत, डर से परे हो—संक्षेप में 'स्कूल रहित' समाज। मैं यह नहीं कह रहा हूं कि हमें अपने सभी स्कूलों को न्यू लिटिल स्कूल जैसा बनाने में जुट जाना चाहिए। मेरा तात्पर्य यह नहीं है।

पहली बात तो यह है और यह स्पष्ट है कि अगर कोई समाज अपने सब स्कूलों को कमोबेश न्यू लिटिल स्कूल जैसा बनाने की अनुमति देता है, तब वह समाज स्कूल ही नहीं चाहेगा और बिना स्कूलों के काम चला लेगा। सबसे अहम यह है कि जिस समाज में सब बच्चों के लिए न्यू लिटिल स्कूल की तरह के स्कूल होंगे, वह रहने और बड़े होने के लिए बहुत

अच्छी और खुशनुमा जगह होगी। फिर भी, यह उस जगह से कहीं कम होगी, जिसे मैं आदर्श कह सकूं।

न्यू लिटिल स्कूल के बच्चों के लिए भी अधिकांश डेनमार्क, सीमा से आगे और पहुंच से बाहर है। मैं नहीं चाहता कि बच्चे अपना सारा समय ऐसी जगह व्यतीत करें जो खास तौर पर उनके लिए बनाई गई हों। उन लोगों के साथ व्यतीत करें जो खासतौर पर उनके साथ रहने के लिए प्रशिक्षित किए गए हों। चाहे यह जगह और ये लोग कितने ही अच्छे क्यों न हों, बच्चों को इससे कहीं ज़्यादा की आवश्यकता होती है—एक समाज जो खुला हो, उनकी पहुंच में हो, जिसमें किसी नागरिक से कुछ छुपा न हो, छोटा–बड़ा, किसी भी आयु का हर नागरिक सक्रिय, गंभीर, ज़िम्मेदार भूमिका अदा करने का हकदार हो। ऐसा समाज बनाने के लिए स्कूलों का स्वरूप बदलने से कहीं ज़्यादा कुछ करने की ज़रूरत है।

❑❑❑❑